21 चिकित्सा का चक्कर

बेढब बनारसी ने प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से चिकित्सा पद्धतियों के विरोधाभाषों को सफलतापूर्वक उभारा है। चिकित्सकों की वेशभूषा, नुस्ख़े, औषधि निर्णय के तर्क जैसे अनेक प्रसंगों पर कटाक्ष करते हुए व्यंग्यकार ने विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के मर्म का वर्णन किया है। पाठ के अध्ययन के बाद आप हिन्दी साहित्य की व्यंग्य की बानगी को समझ पाएँगे।

P4V2J9

मैं बिल्कुल हट्टा-कट्ठा आदमी हूँ। देखने में मुझे कोई भला आदमी रोगी नहीं कह सकता। मेरी आयु लगभग पैंतीस वर्ष की है। आज तक कभी बीमार नहीं पड़ा। लोगों को बीमार देखता था, तो मुझे बड़ी इच्छा होती थी कि किसी दिन मैं भी बीमार पड़ता तो अच्छा होता। यह तो न था कि मेरे बीमार होने पर दिन में दो बार बुलेटिन निकलते, पर इतना अवश्य था कि मेरे बीमार पड़ने पर हंटले बिस्कुट-जिन्हें साधारण अवस्था में घरवाले खाने नहीं देते, दवा की बात और है—खाने को मिलते। यू०डी० क्लोन की शीशियाँ सिर पर कोमल करों से बीवी उड़ेलकर मलती। और सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि दोस्त लोग आकर मेरे सामने बैठते और गंभीर मुद्रा धारणकर के पूछते, कहिए, बेढबजी, कैसी तबीयत है? किसकी दवा हो रही है? कुछ फायदा है? जब कोई इस प्रकार से रोनी सूरत बनाकर ऐसे प्रश्न करता, तब मुझे बड़ा मज़ा आता। और उस समय मैं आनन्द की सीमा के उस पार पहुँच जाता।

हाँ, तो एक दिन मैं हॉकी खेलकर आया। कपड़े उतारे, स्नान किया। शाम को ही भोजन कर लेने की मेरी आदत है, पर आज मैच में रिफ्रेशमेण्ट जरा ज़्यादा खा गया था, इसलिए भूख न थी। श्रीमती जी ने खाने को पूछा। मैंने कह दिया कि आज स्कूल में मिठाई खाकर आया हूँ, कुछ विशेष भूख नहीं है। उन्होंने कहा, ''विशेष न सही साधारण सही। मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था। संभव है, मेरे आने में देर हो।'' मैंने फिर इनकार नहीं किया, उस दिन थोड़ा ही खाया। बारह पूरियाँ थीं और वही रोज़ वाली आध पाव मलाई। खा चुकने के बाद पता चला कि 'प्रसाद' जी के यहाँ से बाग़ बाज़ार का रसगुल्ला आया है। रस तो होगा ही। कल तक संभव है, कुछ खट्टा हो जाए। छह रसगुल्ले निगलकर मैंने चारपाई पर धरना दिया। रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।

एकाएक तीन बजे रात को नींद खुली। नाभि के नीचे दाहिनी ओर पेट में मालूम पड़ता था, कोई बड़ी-बड़ी सूइयाँ लेकर कोंच रहा है। परंतु मुझे भय नहीं मालूम हुआ, क्योंकि ऐसे ही समय के लिए औषधियों का राजा, रोगों का रामबाण, अमृतधारा की एक शीशी सदा मेरे पास रहती है। मैंने तुरत उसकी कुछ बूँदें पान कीं। दोबारा दवा पी। तिबारा। ''पीत्वा-पीत्वा पुनः पीत्वा'' की सार्थकता उसी समय मुझे मालूम हुई। प्रातःकाल होते-होते शीशी समाप्त हो गई। दर्द में किसी प्रकार की कमी न हुई। प्रातःकाल एक डॉक्टर के यहाँ आदमी भेजना पड़ा।

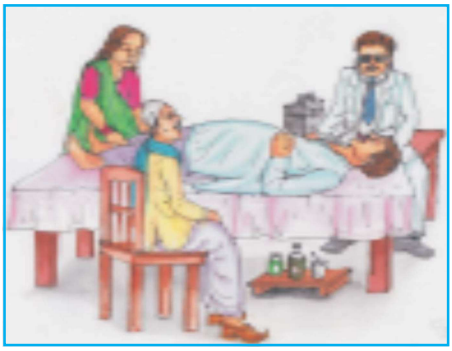

डॉक्टर साहब सरकारी अस्पताल के थे। वे इक्के पर तशरीफ़ लाए। सूट तो वे ऐसा पहने हुए थे कि मालूम पड़ता था, प्रिंस ऑफ वेल्स के वैलेटों में हैं। ऐसे सूटवाले का इक्के पर आना वैसे ही मालूम हुआ, जैसे लीडरों का मोटर छोड़कर पैदल चलना। मैं अपना पूरा हाल भी न कहने पाया था कि आप बोले, 'ज़बान दिखलाइए'। प्रेमियों को जो मजा प्रेमिकाओं की आँख देखने में आता है, शायद वैसा ही डॉक्टरों को मरीजों की जीभ देखने में आता है। डॉक्टर महोदय मुस्कुराए। बोले, ''घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो ख़ुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे हिन्दुस्तान से सोना गायब हो रहा है।'' मैं तो दर्द से बेचैन था। डॉक्टर साहब साहित्य का मजा लूट रहे थे। चलते-चलते बोले, ''अभी अस्पताल खुला न होगा, नहीं तो आपको दवा मँगानी न पड़ती। खैर, चंद्रकला फार्मेसी से दवा मँगवा लीजिएगा। वहाँ दवाइयाँ ताजी मिलती हैं। बोतल में पानी गरम करके सेंकिएगा।'' दवा पी गई। गरम बोतलों से सेंक भी आरम्भ हुई। सेंकते-सेंकते छाले पड़ गए, पर दर्द में कमी न हुई।

दोपहर हुआ, शाम हुई, पर दर्द ने मुझसे ऐसा प्रेम दिखलाया कि हटने का नाम दूर। लोग देखने के लिए आने लगे। मेरे घर पर मेला लगने लगा। ऐसे-ऐसे लोग आए कि कहाँ तक लिखूँ। हाँ, एक विशेषता थी, जो आता एक-न-एक नुस्ख़ा अपने साथ लेता आता था। किसी ने कहा, अजी कुछ नहीं हींग पिला दो। किसी ने कहा चूना खिला दो। खाने के लिए सिवा जूते के और कोई चीज बाकी नहीं रह गई, जिसे लोगों ने न बताई हो।

तीन दिन बीत गए, दर्द में कमी न हुई। लोग आते मुझे देखने के लिए, पर चर्चा छिड़ती थी, ''प्रसाद जी का अमुक नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसा है? राय कृष्णदास हफ्ते में नौ बार दाढ़ी क्यों बनाते हैं? मुझे भी कुछ बोलना ही पड़ता था। ऊपर से पान और सिगरेट की चपत अलग। भला दर्द में क्या कमी हो।

आख़िर में लोगों ने कहा कि तुम कब तक इस तरह पड़े रहोगे, किसी दूसरे की दवा करो। लोगों की सलाह से डॉक्टर चूहानाथ कातरजी को बुलाने की सलाह हुई। आप लोग डॉक्टर साहब का नाम सुनकर हँसेंगे, पर यह मेरा दोष नहीं है, उनके माँ-बाप का दोष है। यदि मुझे उनका नाम रखना होता तो अवश्य ही कोई साहित्यिक नाम रखता। वे थे यथा नाम तथा गुण। आपकी फीस आठ रुपये थी और मोटर का एक रुपया अलग। आप लंदन से एफ०आर०सी०एस० थे।

कुछ लोगों का सौन्दर्य रात में बढ़ जाता है, वैसे ही डॉक्टरों की फीस रात में बढ़ जाती है। खैर, डॉक्टर साहब बुलाए गए। आते ही हमारे हाल पर रहम किया और बोले,

''मिनटों में दर्द गायब हुआ जाता है, थोड़ा पानी गरम कराइए, तब तक यह दवा मँगवाइए।'' एक पुर्जे पर आपने दवा लिखी, पानी गरम हुआ। दो रुपये की दवा आई। डॉक्टर बाबू ने तुरंत एक छोटी-सी पिचकारी निकाली, उसमें एक लंबी सूई लगाई, पिचकारी में दवा भरी और मेरे पेट में वह सुई कोंचकर दवा डाली।

डॉक्टर साहब कुछ कहकर और मुझे सांत्वना देकर चले गए। उसके बाद मुझे नींद आ गई और मैं सो गया। मेरी नींद कब खुली, कह नहीं सकता, पर दर्द में कमी हो चली थी और दूसरे दिन प्रातःकाल पीड़ा रफ़ूचक्कर हो गई थी।

कोई दो सप्ताह मुझे पूरा स्वथ्य होने में लगे। बराबर डॉक्टर चूहानाथ कातरजी की दवा पीता रहा। अठारह आने की शीशी प्रतिदिन आती रही। दवा के स्वाद का क्या कहना। शायद मुर्दे के मुख में डाल दी जाए तो तिलमिला उठे। पंद्रह दिन के बाद मैं डॉक्टर साहब के घर गया उन्हें धन्यवाद देने के लिए। मैंने पूछा कि अब तो दवा पीने की कोई आवश्यकता न होगी। वे बोले, ''यह तो आपकी इच्छा पर है। पर यदि आप काफी एहतियात न करेंगे तो आपको 'अपेंडिसाइटीज' हो जाएगा। आपकी श्रीमतीजी बड़ी भाग्यवती हैं। अगर छह घंटे की देर हो जाती तो उन्हें जिंदगी-भर रोना पड़ता । वह तो कहिए आपने मुझे बुला लिया। अभी कुछ दिनों दवा पीजिए।''

इसी बीच में डॉक्टर महोदय ने ऐसे-ऐसे मर्ज़ों के नाम सुनाए कि मेरी तबीयत फड़क उठी। भला मुझे ऐसे मर्ज़ हुए, जिनका नाम साधारण क्या बड़े पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मालूम नहीं, ये मर्ज़ सब डॉक्टरों को मालूम हैं कि केवल हमारे कातरजी को ही मालूम हैं। ख़ैर, मैंने दवा जारी रखी।

अभी एक सप्ताह भी पूरा न हुआ था कि दो बजे दिन को एकाएक सिर दर्द रूपी फ़ौज ने मेरे शरीर रूपी किले पर हमला कर दिया। डॉक्टर साहब ने जिन-जिन भयंकर मर्ज़ों का नाम लिया था, उनका स्वरूप मेरी रोती हुई आँखों के सामने नृत्य करने लगा। मैं सोचने लगा कि हमला उन्हीं में से किसी एक मर्ज़ का है। तुरंत डॉक्टर साहब के यहाँ आदमी दौड़ाया गया कि इंजेक्शन का सामान लेकर चलिए। वहाँ से आदमी बिना माँगी पत्रिका की भाँति लौटकर आया कि डॉक्टर साहब कहीं गए हैं। इधर मेरी हालत क्या थी, उसका वर्णन यदि सरस्वती शार्टहैण्ड से भी लिखें तो संभवतः समाप्त न हो। हवाई जहाज़ के पंखे की तेजी के समान तो करवटें बदल रहा था, इधर मित्रों और घरवालों की कांफ्रेंस हो रही थी कि अब कौन बुलाया जाए, पर निःशस्त्रीकरण सम्मेलन की भाँति कोई न किसी की बात मानता था, न कोई निश्चय ही हो पाता था।

मालूम नहीं, लोगों में क्या-क्या बहसें हुईं, कौन-कौन प्रस्ताव फेल हुए, कौन-कौन

पास। अंत में हमारे मकान के बगल में रहने वाले पंडितजी की विजय हुई और आयुर्वेदाचार्य, रसज्ञरंजन, चिकित्सा-मार्तण्ड, कविराज पंडित सुखदेव शास्त्री को बुलाने की बात तय हुई। एक सज्जन उन्हें बुलाने के लिए भेजे गए। कोई पैंतालीस मिनट बीत गए, परंतु न वैद्यजी आए, न भेजे गए सज्जन का ही पता चला। एक ओर दर्द आयकर की तरह बढ़ता जा रहा था, दूसरी ओर इन लोगों का भी पता नहीं। और भी बेचैनी बढ़ी, अन्त में जो साहब गए थे, लौटे। वे बोले, ''वैद्यजी ने बड़े गौर से पत्रा देखा और कहा कि अभी बुध के संक्रांति वृत्त में शनि की स्थिरता है, इकतीस पल नौ विपल में शनि बाहर हो जाएगा और डेढ़ घटी एकादशी का योग है। उनके समाप्त होने पर मैं चलूँगा। सुनकर मेरा कलेजा कबाब हो गया। मगर वे कह आए थे, अतएव बुलाना भी आवश्यक था। मैंने फिर उन्हें भेजा।

कोई आध घंटे बाद वैद्यजी एक पालकी पर तशरीफ़ लाए। आकर आप मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गए। आप धोती पहने हुए थे और कंधे पर एक सफ़ेद दुपट्टा डाले हुए थे। इसके अतिरिक्त शरीर पर सूत के नाम पर जनेऊ था, जिसका रंग देखकर यह शंका होती थी कि कविराज जी कुश्ती लड़कर आ रहे हैं। वैद्यजी ने कुछ और पूछा। पहले नाड़ी हाथ में ली। पाँच मिनट तक एक हाथ की नाड़ी देखी, फिर दूसरे हाथ की। बोले, ''वायु का प्रकोप है, यकृत में वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत्र में जा पहुँची है। इससे मंदाग्नि का प्रादुर्भाव होता है और किसी कारण जब भोज्य पदार्थ प्रतिहत होता है, तब शूल का कारण होता है।''

कविराज जी मालूम नहीं क्या बक रहे थे और मेरी तबीयत दर्द और क्रोध से एक दूसरे ही संसार में छटपटा रही थी। आख़िर मुझसे न रहा गया। मैंने एक सज्जन से कहा, जरा अलमारी में से 'आप्टे' का कोश तो लेते आइए। यह सुनकर लोग चकराए। कुछ लोगों को संदेह हुआ कि अब मैं होश में नहीं हूँ। मैंने कहा दवा तो पीछे होगी, मैं पहले समझ तो लूँ कि मुझे रोग क्या है। तत्पश्चात वैद्यजी 'चरक' 'सुश्रुत' के श्लोक सुनाने लगे। और अंत में कहा, देखिए, मैं दवा देता हूँ और अभी आपको लाभ होगा। पंडितजी ने दवा दी। कहा की अदरख के रस में इस औषधि का सेवन करना होगा। ख़ैर साहब, फीस दी गई। किसी प्रकार वैद्यजी से पिण्ड छूटा। दो दिन दवा की गई। कभी-कभी अवश्य कम हो जाता था, पर पूरा दर्द न गया। सी०आई०डी० के समान पीछा छोड़ता ही न था।

चारपाई पर पड़ा रहने लगा। दिन को मित्रों की मंडली आती थी। वह आराम देती थी कम, दिमाग चाटती थी अधिक। एक सज्जन मुझे देखने के लिए तशरीफ़ लाए थे। बोले, ''साहब, आप लोगों को देश का हर समय ध्यान रखना चाहिए। आप किसी भारतीय हकीम अथवा वैद्य को दिखलाइए।'' मैंने मन में सोचा कि वैद्य महाराज को तो मैंने दिखा ही लिया, हकीम भी सही।

हकीम साहब आए। यद्यपि मैं अपनी बीमारी का ज़िक्र और बेबसी का हाल लिखना चाहता हूँ, पर हकीम साहब की पोशाक और उनके रहन-सहन तथा फ़ैशन का ज़िक्र न करना मुझसे न हो सकेगा। सर्दी बहुत तेज़ नहीं थी। बनारस में बहुत तेज़ सर्दी नहीं पड़ती। फिर भी ऊनी कपड़ा पहनने का समय आ गया था। परंतु हकीम साहब चिकन का बंददार कुरता पहने हुए थे। सिर पर बनारसी लोटे की तरह टोपी रखी हुई थी। पाँव में पाज़ामा ऐसा मालूम होता था कि चूड़ीदार पाज़ामा बनने वाला था, परंतु दर्ज़ी ईमानदार था, उसने कपड़ा चुराया नहीं, सबका सब लगा दिया अथवा यह भी हो सकता है कि ढीली मोहरी के लिए कपड़ा दिया गया हो, दर्ज़ी ने कुछ कतर-ब्योंत की हो और चुस्ती दिखाई हो। जूता कामदार दिल्ली वाला था। हकीम साहब पतले-दुबले इतने थे कि मालूम पड़ता था, अपनी तंदुरूस्ती अपने मरीज़ों को बाँट दी है। हकीम साहब में नज़ाकत भी बला की थी। रहत थे बनारस में मगर कान काटते थे लखनऊ के।

आते ही मैंने सलाम किया, जिसका उत्तर उन्होंने मुस्कुराते हुए बड़े अंदाज़ से दिया और बोले, ''मिज़ाज कैसा है?''

मैंने कहा, ''मर रहा हूँ। बस, आपका ही इंतजार था। अब यह ज़िन्दगी आपके ही हाथों में है। हकीम साहब ने कहा, ''यार ! आप तो ऐसी बात करते हैं, गोया ज़िन्दगी से बेज़ार हो गए हैं। भला ऐसी गुफ़्तगू भी कोई करता है। मरे आपके दुश्मन, नब्ज़ तो दिखाइए। खुदाबंदकरीम ने चाहा तो आनन-फानन में दर्द रफ़ूचक्कर होगा।''

मैंने कहा, ''अब आपकी दुआ है। आपका नाम बनारस ही नहीं, हिंदुस्तान में लुकमान की तरह मशहूर है, इसीलिए आपको तकलीफ़ दी गई है।''

दस मिनट तक हकीम ने नब्ज़ देखी। फिर बोले, ''मैं नुस्खा लिख देता हूँ। इसे इस वक्त आप पीजिए, इंशा अल्लाह जरूर शिफ़ा होगी।''

हकीम साहब चलने को तैयार हुए। उठे। उठते-उठते बोले, ''जरा एक बात का ख्याल रखिएगा कि आजकल दवाइयाँ लोग बहुत पुरानी रखते हैं। मेरे यहाँ ताजी दवाइयाँ मिलती हैं।''

दर्द फिर कम हो चला। परंतु दुर्बलता बढ़ चली थी। कभी-कभी दर्द का दौरा भी अधिक वेग से हो जाता था। घरवालों को और मुझे भी दर्द के संबंध में विशेष चिन्ता होने लगी। कोई कहता था कि लखनऊ जाओ, कोई एक्स-रे का नाम लेता था। किसी-किसी ने राय दी कि जल-चिकित्सा कीजिए। एक सज्जन ने कहा, यह सब कुछ नहीं। आप होमियोपैथी

के मार्ग की पहचान करें और बताएँ कि—

के मार्ग की पहचान करें और बताएँ कि—

इलाज़ शुरू कीजिए। देखिए, कितनी शीघ्रता से लाभ होता है। बोले, ''साहब, इन नन्ही-नन्ही गोलियों में मालूम नहीं कहाँ का जादू है। साहब, जादू का काम करती हैं, जादू का।

एक प्रकृति-चिकित्सा वाले ने कहा था कि आप गीली मिट्टी पेट पर लेपकर धूप में बैठिए। एक हफ्ते में दर्द हवा हो जाएगा। हमारे ससुर साहब एक डॉक्टर को लेकर आए। उन्होंने कहा ''देखिए साहब, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। समझदार हैं।'' मैं बीच में बोल उठा, ''समझदार न होता तो आपको कैसे यहाँ बुलाता।''

इसी बीच मेरी नानी की मौसी मुझे देखने आई। उन्होंने बड़े प्रेम से देखा। देखकर बोली, मैं तो पहले ही सोच रही थी कि यह कुछ ऊपरी खेल है।'' मैंने पूछा, ''यह ऊपरी खेल क्या है नानी जी?'' बोलीं, ''बेटा, सब कुछ किताब में थोड़े ही लिखा रहता है। बात यह है कि किसी चुड़ैल का फसाद है।'' मेरी स्त्री और माता की ओर देख कहने लगीं, ''देखो न इसकी बरौनी कैसी खड़ी है। कोई चुड़ैल लगी है। किसी को दिखा देना चाहिए।'' मैंने कहा, ''डॉक्टर तो मेरी जान के पीछे लग गए हैं। क्या चुड़ैल उनसे भी बढ़कर है?'' जब सब लोग चले गए तब मेरी पत्नी ने कहा, ''तुम लोगों की बात क्यों नहीं मान लिया करते? कुछ हो या न हो, इसमें तुम्हारा हर्ज ही क्या है?'' मेरे दर्द में किसी विशेष प्रकार की कमी न हुई। ओझा से तो किसी प्रकार की आशा क्या करता? पर बीच-बीच में दवा भी होती जाती थी।

कुछ लाभ अवश्य हुआ, पर पूरा फायदा न हुआ। मैंने अब पक्का इरादा कर लिया कि लखनऊ जाऊँ। जो बात काशी में नहीं हो सकती, लखनऊ में हो सकती है। वहाँ सभी साधन हैं।

सब तैयारी हो चुकी थी कि इतने में एक और डॉक्टर को एक मेहरबान लिवा लाए। उन्होंने देखा, कहा, ''जरा मुँह तो देखूँ।'' मैंने कहा, ''मुँह, जीभ जो चाहे देखिए।'' देखकर बड़े जोर से हँसे। मैं घबराया, ऐसी हँसी केवल कवि-सम्मेलन में बेढंगी कविता के समय सुनाई देती है। मैं चकित भी हुआ। डॉक्टर बोले, ''किसी डॉक्टर को यह सूझी नहीं, तुम्हें, 'पाइरिया' है। उसी का जहर पेट में जा रहा है और सब फसाद पैदा कर रहा है।'' मैंने कहा, तब क्या करूँ?'' डॉक्टर साहब ने कहा, ''इसमें करना क्या है? किसी दंत-चिकित्सक के यहाँ जाकर दाँत निकलवा दीजिए।'' मैंने अपने मन में कहा आपको यह तो कहने में कुछ कठिनाई ही नहीं हुई। गोया दाँत निकलवाने में कोई तकलीफ़ ही नहीं होती। खैर, रात भर मैंने सोचा। मैंने भी यही निश्चय किया कि यही डॉक्टर ठीक कहते हैं। दंत-चिकित्सक के यहाँ से पुछवाया। उसने कहलाया कि तीन रुपये की दाँत तुड़वाने के लिए लगेंगे। कुल दाँतों के लिए छियानवे रुपये लगेंगे। मगर मैं आपके लिए छह रुपये छोड़ दूँगा। इसके अतिरिक्त दाँत बनवाई डेढ़ सौ अलग। यह सुनकर पेट के दर्द के साथ सिर में भी चक्कर आने लगा। मगर मैंने सोचा कि जान सलामत है तो सब कुछ। इतना और खर्च करो। श्रीमती से मैंने रुपये माँगे। उन्होंने पूछा, ''क्या होगा?'' मैंने सारा हाल कह दिया। वे बोलीं, तुम्हारी बुद्धि कहीं घास

चरने गई है? आज कोई कहता है दाँत उखड़वा डालो, कल कोई कहेगा, सारे बाल उखड़वा डालो, परसों कोई डॉक्टर कहेगा, नाक नुचवा डालो, आँखें निकलवा दो। यह सब फ़िजूल है। खाना ठिकाने से खाओ। पंद्रह दिन में ठीक हो जाओगे।'' मैंने कहा, तुम्हें अपनी दवा करनी थी तो इतने रुपये क्यों बरबाद कराए ?

–बेढब बनारसी

शब्दार्थ

चिकित्सा – उपचार, इलाज
बुलेटिन – ख़बर, समाचार
वैलेट – विशेष सेवक
रिफ्रेशमेन्ट – तरोताजा
छायावादी – एक साहित्यिक युग जिसमें चित्रण की सूक्ष्मता पर बल दिया गया
एहतियात – सावधानी
प्रादुर्भाव – प्रकट होना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. लेखक को बीमार पड़ने की इच्छा क्यों हुई ?
2. लेखक ने वैद्य और हकीम पर क्या-क्या कहकर व्यंग्य किया है ? उनमें से सबसे तीखा व्यंग्य किस पर है ? उल्लेख कीजिए।
3. अपने देश में चिकित्सा की कितनी पद्धतियाँ प्रचलित हैं ? उनमें किन-किन पद्धतियों से लेखक ने अपनी चिकित्सा कराई ?
4. इस पाठ से हास्य और व्यंग्य की बातें छाँटकर लिखिए। जैसे–''रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं थे, स्थूल थे।''
5. **किसने कहा, किससे कहा ?**
   (क) मुझे आज सिनेमा जाना है। तुम अभी खा लेते तो अच्छा था।
   (ख) घबराने की कोई बात नहीं है। दवा पीजिए, दो ख़ुराक पीते-पीते आपका दर्द ग़ायब हो जाएगा।
   (ग) वायु का प्रकोप है। यकृत में वायु घूमकर पित्ताशय में प्रवेश कर आंत्र में जा पहुँचा है।
   (घ) ''दो ख़ुराक पीते-पीते आपका दर्द वैसे ही गायब हो जाएगा, जैसे–हिन्दुस्तान से सेना ग़ायब हो रहा है।'' इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

2. एलोपैथी, होमियोपैथी एवं आयुर्वेद चिकित्सा से आप क्या समझते हैं ?
3. किस आधार पर इस पाठ को हास्य और व्यंग्य की श्रेणी में रखेंगे ? स्पष्ट कीजिए।

व्याकरण

1. इस पाठ में प्रयुक्त मुहावरों को चुनकर लिखिए।
2. **इन युग्म शब्दों के अर्थ लिखिए।**

(क)	प्रसाद	(ख)	भवन
	प्रासाद		भुवन
(ग)	कांति	(घ)	भव
	क्रांति		भव्य

गतिविधि

1. हकीम साहब की वेश-भूषा और उनके कद-काठी का वर्णन लेखक ने बड़े मज़ेदार ढंग से किया है। लेखक के वर्णन के आधार पर आप हकीम साहब का चित्र बनाइए।
2. इस व्यंग्य रचना को गम्भीर रचना में बदलिए।

इन्हें भी जानिए

जब किसी घटना या दृश्य का वर्णन करते समय असंगतियों को हास्यपूर्ण ढंग से प्रकट किया जाता है, तब उसे व्यंग्य कहते हैं। व्यंग्य ऊपर से हास्य लगता है, लेकिन जब उसके मर्म तक हमारी निगाह जाती है, तब हम असंगति या विकृति के कारणों की असलियत से परिचित होते हैं। प्राय: व्यवस्था की विकृतियों का वर्णन करने के लिए इस विधा का प्रयोग किया जाता है।